

1. सृष्टिवाद (Creation Theory)

2. विकासवाद (Development Theory)



सृष्टिवाद के अनुसार यह जगत ईश्वर की रचना है, जबकि विकासवाद जगत को क्रमिक विकास, संयोग & आवश्यकता का परिणाम मानता है।

N-V का परमाणुवाद जगत की रचना संबंधी एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। N-V मतानुसार यह विश्व ईश्वर द्वारा रचित है और इस जगत का मूल उपादान कारण परमाणु है। चूंकि यहां परमाणुओं के आधार पर विश्व के सावयव वस्तुओं की उत्पत्ति & विनाश की व्याख्या की गई है, इसलिए यह सिद्धांत परमाणुवाद कहलाता है। परमाणु ही जगत के वस्तुओं का आदि & अंत दोनों कारण है। परमाणुओं के संयोग से सृष्टि होती है और इनके वियोग से प्रलय होता है।

परमाणु का अर्थ-

यहाँ परमाणु को परिभाषित करते हुए कहा गया है 'परम वा बृटे' अर्थात् जिसे और अधिक तोड़ा या विभाजित न किया जा सके, वह परमाणु है।

परमाणु की विशेषताएं-

परमाणु की उपरोक्त परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि परमाणु निरव्यय, सूक्ष्मतम, अविभाज्य & अनिर्वाही है।

परमाणुओं की न तो उत्पत्ति होती है & न ही विनाश। ये परमाणु ही जगत की भौतिक, अनित्य & साव्यव वस्तुओं का मूल उपादान कर रहे हैं।

प्रकार-

✓ दर्शन में 4 प्रकार के परमाणुओं को स्वीकार किया गया है -
पृथ्वी, आग्नि, वायु & जल के परमाणु। इन परमाणुओं में गुणात्मक & मात्रात्मक दोनों भेद हैं। प्रत्येक परमाणु में अपना एक विशेष बल है -
इसे हम निम्न प्रकार से देख सकते हैं -



| | | | |
|-------------------|-------------|-----------------|----------------------|
| वायु | आग्नि | जल | पृथ्वी |
| गुणः स्पर्श | स्पर्श, रूप | स्पर्श, रूप, रस | स्पर्श, रूप, रस, गंध |
| मात्राः सूक्ष्मतम | | | |

ज्ञान कैसे?

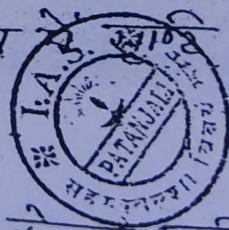
चूंकि परमाणु सूक्ष्मतम होते हैं, अतः इनका ज्ञान प्रत्यक्ष से नहीं किया जा सकता। इनकी सत्ता का ज्ञान अनुमान से होता है। परमाणु सूक्ष्म है & इसी सूक्ष्म से स्थूल की उत्पत्ति की बात की गई है। इसके विपरीत सांख्य दर्शन में सूक्ष्म प्रकृति से स्थूल जगत के विकास की बात स्वीकार की गई है।

सिद्धि का तर्क -

✓ मतानुसार जितने भी साव्यव पदार्थ हैं वे अनित्य हैं, नश्वर हैं, विभाज्य हैं। वे अवयवों से बने होते हैं। इन अवयवों का विभाजन करते-करते हम उस स्थिति तक पहुँचते हैं जिसके आगे और विभाजन संभव नहीं होता। अगर हम विभाजन प्रक्रिया का अंत नहीं मानें तो आकाश

शेष की उत्पत्ति हो जायेगी। स्पष्ट है कि ये अविनाश्य & सूक्ष्मतम अवयव ही परमाणु हैं। जैसे हम बड़े परिमाण की ओर बढ़ते-2 आकाश की एक पहुँचते हैं, जिससे क्या कोई परिमाण नहीं है, उसी प्रकार सबसे बड़ा परिमाण भी होना चाहिए। परमाणु ही सबसे बड़ा परिमाण है। इससे परमाणु की सिद्धि होती है।

N-V मतानुसार परमाणु स्वभावतः निष्क्रिय हैं। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न उभर कर आता है कि इन निष्क्रिय परमाणुओं से जगत की सृष्टि क्यों, किसके द्वारा & कैसे होती है। N-V मतानुसार जलियों को उनके कर्मों के अनुसार फल प्रदान करने के लिए ईश्वर यह सृष्टि करता है। ईश्वर 'अदृष्ट' (मनुष्य के पाप & पुण्य कर्मों का भंडार) के अनुसार निष्क्रिय परमाणुओं में गति का संचार कर जगत की सृष्टि करता है। इस सृष्टि क्रम में ईश्वर 2 परमाणुओं को मिलाकर एक द्रव्यसंघ की रचना करता है। 3 द्रव्य अणुओं के संयोग से एक त्रैयण अणु बनता है & इस प्रकार इस क्रम से सृष्टि निर्माण की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है।



V दर्शन के इस परमाणुवाद से केवल अस्तित्व & साध्यत्व जगत के उत्पत्ति & विनाश की व्याख्या हो पाती है। यहाँ दिक्, काल, आत्मा, मन, आकाश इन पंच द्रव्यों की व्याख्या इन परमाणुओं के आधार पर नहीं की गई है। ये पंच द्रव्य परमाणुओं के साथ-2 ही सहअस्तित्व वान हैं।

N-V दर्शन का परमाणुवाद एक रूप में ईश्वरवाद & अनैश्वरवाद में समन्वय करता है। ईश्वरवाद ईश्वर को जगत का कारण मानता है, जबकि अनैश्वरवाद भौतिक तत्वों के आधार पर जगत् की उत्पत्ति या विकास की व्याख्या करता है। N-V दर्शन में यद्यपि परमाणुओं से जगत के निर्माण की बात की गई है, परन्तु यह सृष्टि ईश्वर की इच्छा से ईश्वर के द्वारा होती है।

N-V का यह परमाणुवाद ग्रीक परमाणुवाद से निम्न रूपों में भिन्न है -

N-V का परमाणुवाद

ग्रीक (डेमोक्रेटिस & ल्यूसिपियस) का

परमाणु स्वभावतः निष्क्रिय

1. स्वभावतः सक्रिय

परमाणुओं में गुणगत & मात्रात्मक

2. केवल मात्रात्मक भेद

भेद दोनों

परमाणुओं में गति हेतु ईश्वर जरूरी

3. गति हेतु ईश्वर आवश्यक नहीं

विश्व की प्रयोजनपूर्ण व्याख्या

4. विश्व की संभवत व्याख्या

आत्मा भौतिक है।

5. आत्मा अणुओं से निर्मित है।

प्रालोचना -

शंकर के अनुसार N-V के परमाणुवाद को स्वीकार नहीं किया जा

सकता। परमाणुओं की 4 संभव स्थितियाँ हैं - स्वभावतः सक्रिय,

स्वभावतः निष्क्रिय, सक्रिय & निष्क्रिय दोनों, न सक्रिय न निष्क्रिय। यदि पर

माणुओं को सदैव सक्रिय माना जाय तो फिर केवल सृष्टि की व्याख्या होगी

